International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 367-369

भारतीय विदेश नीति में नवीन प्रतिमान: मोदी डॉक्ट्रिन

जग्गू दान रतनू
पीएचडी शोधार्थी,जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सारांश
उपर्युक्त शोधमें भारतीय विदेश नीति में आये परिवर्तन पत्र - की विवेचना की गयी और स्थिरता के संदर्भ में तमाम पक्षों है। सामान्यत, वैश्विक राजनीति में नवीन घटनाक्रम जैसे ब्रेक्सिट की घटना , डोनल्ड ट्रूप की विजय और समूचे विश्व वैश्वीकरण के प्रति बढ़ते विरोध के सदर्भ में भारतीय विदेश नीति में भी नवीन रुपनातरण आये। राष्ट्रवादी आदर्शो से प्रेरित सरकार बनने के बाद विदेश नीति में नवीन संकल्पनाओ और प्रतिमानो की स्थापना चर्चा अकादमिक क्षेत्र में शुरु हुई। किस तरह हमारी घरेलु राजनीति ने भारत की पश्चिम एशिया के प्रति विदेश नीति को प्रभावित किया, उसका भी उल्लेख किया गया है। जिसके अंतर्गत इजराइल के रिश्तो को प्रगाढ़ता प्रदान करना , संयक्त राष्ट्र संघ में फिलिस्तीनी मुद्दे पर अनुपस्थित रहना। वही मेक इन इंडिया , सांस्कृतिक कूटनीति , अंतरीक्ष कूटनीति जैसे कारको के माध्यम से महाशक्ति बनाने की चाह इत्यादी आयामों की विवेचना की गयी है। इसके साथ दक्षिण एशिया महाद्वीप में सार्क जैसे संगठन के विकल्प के तोर पर बिम्सटेक को वरीयता देना जैसे तत्व भारतीय विदेश नीति में यथार्थवादी और सामाजिक संरचनावादी दृश्टिकोणों को चरितार्थ करती है।

शीतयुद्धोत्तर विश्व व्यवस्था,वैश्वीकरण,निजीकरण,उदारीकरण जैसी संकल्पनाओ की महता बढ़ी है। सोवियत संघ से विघटन क साथ सयुंक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में एकध्रुवीय व्यवस्था का उदय हुआ। वैश्विक परिदृश्य में शक्ति की परम्परागत धारणा, जो राज्य केंद्रित मात्र सैन्य शक्ति तक सीमित थी,उसमे मानव सुरक्षा नामक अवधारणा का आर्विभाव से नया परिवर्त्तन आया। अब शक्ति को बहुआयामी परिभाषित किया जानिए लगा जिसमे यथा- आर्थिक,सांस्कृतिक,भू-राजनैतिक और भू-रणनीतिक अवयवों को शामिल किया लगा। अंतरराष्ट्रीय राजनिति के विद्वान कोहेन और जोसफ नये ने "जटील अंतरनिर्भरता" की अवधारणा का प्रतिपदान किया। इसके अलावा जोसफ नये ने "सॉफ्ट पावर" की धारणा का प्रतिपादन किया।

इस सदंर्भ में भारत जैसी उभरती अर्थव्यस्था को और इसके गौरवशाली शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की परम्परा वाले राष्ट्र को उपेक्षा करना असंभव प्रतीत होता। भारतीय विदेश नीति की प्रकृति स्वतंत्रता प्राप्ति से वर्ष 1991तक आदर्शवादी नेहरुवियन सिद्धान्तो से प्रेरित बंद अर्थव्यवस्था का स्वरूप लिये हुए थी।उस दौरान वित्तीय संकट का सामना करना पड़ा। जिसके परिणाम स्वरूप प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव के नेतृत्व में भारतीय अर्थव्यस्था को विश्व अर्थव्यवस्थाओ के लिया खोला गया,नवीन अर्थव्यवस्था नीति जैसे कानून बना कर आमूलचूल परिवर्तन किया गए। कालांतर में अटल बिहारी बाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व के दौरान भारत परमाणु शक्ति सम्पन राष्ट्र बना जिससे अंतरराष्टीय स्तर पर भारत की पहचान एवं कद में बढ़ोतरी हुई। श्री मन मोहन सिंह के नेतृत्व में की सरकार 10 वर्ष गठबंधन की सर्कार चली।

भारतीय राजनीति में वर्ष 2014में संपन्न हुए लोक सभा के चुनाव मेंनरेंद्र मोदी के नेतृत्व मेंपूर्ण बहुमत के साथ भारतीय जनता पार्टी दल की सरकार बनी। इसके परिणाम स्वरूप भारतीय विदेश नीति में नए प्रतिमान स्थापित हुए जिसे “मोदी डॉक्ट्रिन” के नाम से जाना जाता है। जिसकी शुरुआत शपथ ग्रहण समारोह में दक्षिण एशिया के देशो के सरकार प्रमुखों को बुलाया,जो भारत के क्षेत्रीय शक्ति क रूप में प्रकट स्थापित होने को इंगित करता है। भारतीय विदेश नीति और सेशन व्यवस्था में व्याप्त दीर्घकालिक जड़ता जैसी प्रवृतियो में नवीन चेतना रूपी प्रगतिशील नीतियों का आगाज किया। विदेश नीति के आंतरिक कारको में 'मेक इन इंडिया'और नीति आयोग का गठन सहयोगी संघवाद को बढ़ावा देनी की प्रवृति को दर्शाता है।

अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य पर

अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य पर प्रधान मंत्री मोदी ने भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण बदलाव किए। जिसमे दिल्ली के अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान और अन्य प्रमुख पश्चिमी शक्तियों के साथ घनिष्ठ संबंध पर बल। भारत को एक समाजशास्त्रीय स्थिरता के साथ एक आत्मनिर्भर आर्थिक शक्ति बनाने के लिए और संभवत: सुरक्षा तंत्र की सुरक्षा के

लिए देश की एक अधिक व्यावहारिक हित-उन्मुख विदेश नीति को प्रकट करता है। हालांकि, हाल के दिनों में सभी अंसतुलित मुद्दों पर अमेरिका को अपने पक्ष में लेकर प्रेरित किया जो भारतीय विदेश नीति में यह बदलाव जो लंबे समय से पूरा नहीं कर पाया है ताकि पाकिस्तान दवरा प्रायोजित आतंकवाद का निर्यात बंद कर दिया जाए। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत हेतु स्थायी सीट और बीजिंग और इस्लामाबाद के बीच नई दिल्ली के खिलाफ बढ़ रहे उनकी नापाक गतिविधियों को नियंत्रित करने का राजनयिक स्तर पर भसक प्रयास किये।

अफगानिस्तान और ईरान के साथ त्रिपक्षीय समझौते का परिणाम चीन के बढ़ते प्रभाव को सन्तुलित करने का सराहनीय रहा।भारतीय विदेश मंत्रालय १५० राष्ट्रों के साथ रिस्तो की मजबूती प्रदान के लिए बहुत सक्रीय रहा है। प्रधानमंत्री कार्यालय में निर्णय निर्माण प्रकिया वर्तमान घटित घटनाओ के आलोक में व्यवहारिकता के मनको पर खरी उत्तरी है। इसकी मिशाल के तौर पर मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण शासन की सदस्यता प्राप्त की और संयुक्त राज्य अमेरिका और इसराइल जैसे राष्ट्रों के साथ पुराने रिस्तो में नयी धार दी। यथार्थवादी दृश्टिकोण का अनुकरण किया। यह भारतीय विदेश नीति में नयी सफलता है,जो एक उभरते सैन्य और सामरिक गठबंधन को समापन कर प्रगति और राजनयिक सफलता है। समय अंतराल पर परखे हुए मित्र रूप में रूस गणराज्य के साथ लंबे समय से मजबूत संबंधों को बनाये रखा गया। इसके अतिरिक्त कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे देसो क साथ परमाणु ईंधन के मामले में 'लॉजजैम'को स्वीकृति प्रदान की गयी। कनाडा के साथ यूरेनियम से संबन्धित करार अंतिम पायदान पर पहुँचा और इसके साथ ही भारतीय रिएक्टरों में इसकी आपूर्ति की शुरुआत हो गयी। ऑस्ट्रेलिया के साथ भी आपूर्ति जल्द ही शुरू होने की संभावना है।

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन के कुछ सदस्य राष्ट्रों ने हमारी प्रतिक्रिया का उचित जवाब दिया चाहे मोटर वाहन समझते का या बिम्सटेक के स्तर पर बहुआयामी रिस्तो नयी डिश देनी हो। भारत ने व्यापर,तकनिकी और आतंकवाद विरोधी अभियान में बांग्लादेश,भूटान और म्यांमार के साथ वार्ताए सफलता की और अग्रसर है। व्यापार सहयोग के साथ ही साथ रणनीतिक सहयोग सड़क,रेल,समुद्री और गैस पाइपलाइन लिंक के जरिये स्थापित किया जाना है।

राजनीतिक क्षेत्र इस मोदी डॉक्ट्रिन की सफलता देखने को मिल रहा है जैसे बड़े या छोटे राष्ट्रों की यात्रा करके नए रिश्ते स्थापित करने में काफी हद तक सफल हुए,जो पहले से कहीं ज्यादा परस्पर विश्वास और निर्भरता पर आधारित है और उम्मीद है कालातंर मे आर्थिक परिदृश्य में भी फायदा मिलेगा।

सांस्कृतिक क्षेत्र में सयुंक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से योग की महत्ता को जग जाहिर करवाना और भारत की सॉफ्ट पावर की विदेश नीति में भूमिका को धारदार बनाया। जो भारतीय विदेश नीति के सिद्धांतो एवं उद्देश्यों को बहुआयामी स्वरूप प्रदान करता है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के उद्बोधन भाषण के साथ आगे बढ़े। भारत ने अतीत में सामरिक संयम की नीति को देखते हुए सर्जिकल स्ट्राइक अप्रत्याशित थे और वास्तव में यह एक दृढ़ निर्णय था।बलूचिस्तान के मुद्दे पर प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की टिप्पणी भारत की विदेश नीति में एक आदर्श रूपांतरण प्रतीक है। जिससे से ऐसा प्रतीत होता है की हमारी विदेश नीति अब सक्रिय और व्यावहारिक बन गई। जो वर्तमान में भारत और पाकिस्तान के बीच संबंधों पर इसके नया आयाम स्थापित करती है।

भारत-अमेरिका "द्विपक्षीय" संबंधो में अमेरिकी राष्ट्रपति ने "शताब्दी की परिभाषा साझेदारी"कहा जो अन्योन्याश्रितता भारत-अमरीका की "द्विपक्षीय विलक्षणता" के तर्क के साथ जुड़ा हुआ है। भारत और अमेरिका राज्य सीखेंगे और पहले से ही एक दूसरे की संस्कृति, अंतःकरण और डायस्पोरा से सीखेगे।

दक्षिण पूर्व एशियाई और एशिया प्रशांत क्षेत्र के राष्ट्रों के साथ वांछित प्रोत्साहन प्रदान करने लिए 'लुक ईस्ट'नीति का नाम परिवर्तित करके 'एक्ट ईस्ट'रखा। जिससे नए गतिशीलता और जीवन शक्ति हासिल हुई। भारत की नीतिगत गणनाओं में जापान के रूप में उभरा है।न्यूक्लियर सप्लायर्स ग्रुप की सदस्यता हेतु वैध परमाणु शक्ति के रूप में वैश्विक स्वीकृति प्राप्त करने के लिए विभिन्न देशों तक पहुंचने के प्रयास का नेतृत्व किया।आर्थिक मोर्चे पर भारत ने विश्व व्यापार संघठन की बलि सम्मेलन में तृतीय विश्व के देशो की अगवानी की और सब्सिडी के मुद्दे पर स्पेशल सेफ़गार्ड मैकेनिज्म का नया क्लॉज़ जुड़वाया गया।

एशिया महाद्वीप कई स्तर पर

उरी हमले केबाद भारत ने सीमापारीय सर्जिकल स्ट्राइक कर आतंकवादियों के कैंप को ध्वस्त क्र भौतिक सुरक्षा का नये प्रतिमान स्थापित कर आंतकवाद के प्रति भारत की 'नो टॉलरेंस'की नीति को आगे बढ़ाया। उरी हमले के बाद पाकिस्तान को अंतरराष्ट्रीय मंचो पर अलग-थलग करने की

नीति अपनाई जोकाफी हद तक सफल रही। इस दिशा में भारत ने बलुचिस्तान के मुद्दे पर पाकिस्तान का मानवाधिकारो का रिकार्ड को दुनिया के सामने रखा,जिससे भारत की राजनयिक विजय कहा है। म्यांमार में आतकवादी और पृथक्तावादियो के किलो को नेस्ताबूद कर आंतरिक सुरक्षा को सुदृढ़ किया।

पश्चिमी एशिया में यथार्थवादी दृश्टिकोण की अनुपालना की, वही फिलिस्तीन क मुद्दे पर संतुलित पक्ष रखा। इजराइल के विरुद्ध लाये गए मानवाधिकारो के उल्लघन के प्रस्ताव पर संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का अनुपुस्थित रहना मुनासिब समझा।

मौसम परियोजना हिन्द महासागरीय राष्ट्रों के सांस्कृतिक संबंध को प्रगाढ़ता दी।

दक्षिण पूर्वी राष्ट्रों के साथ "कल्चरल डिप्लोमेसी" को बढ़ावा दिया। जिसके अंतरगत बौद्ध धर्म और दर्शन का प्रचर प्रसार किया। इन देशो के साथ मजबूत संबंध किया,जो भारतीय विदेश नीति में नवीन प्रतिमान है।

आंतरिक सुरक्षा के लिहाज से

विमुद्रीकरण जैसी रेडिकल पहल क माध्यम से नक्सलवाद,आंतकवाद और पृथकतावादी गतिविधियों पर गहरीचोट की गयी। नक्सल वाद जैसे मुद्दे पर "समाधान" जैसी अत्याधुनिक तकनिकी के तत्वों से समाहित का आगाज किया जोभारतीय आंतरिक सुरक्षा के दृश्टिकोण से महत्वपूर्ण है।पश्चिमी सीमा को आधुनिक तकनीक से लेस करने की दिशा में अग्रसर है जो दीर्घकालिक भारत की समृद्धि क हित में है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है की भारतीय विदेश नीति नरेंद्र मोदी की सरकारमें प्रगतिशीलता और बहुआयामों को बरकार रखेगी। साथ हुई साथ पुराणी नीतियों को प्रभावी तरीके से क्रियान्वित करने का प्रयास करे। जिससे भारत को फिर से विश्व गुरु बनाने के लक्ष्य को हासिल करसके।

सामान्यत,वैश्विक राजनीति में नवीन घटनाक्रम जैसेब्रेक्सिट की घटना,डोनल्ड ट्रूप की विजय और समूचे विश्व वैश्वीकरण के प्रति बढ़ते विरोध के सदर्भ में भारतीय विदेश नीति में भी नवीन रुपनातरण आये। राष्ट्रवादी आदर्शो से प्रेरित सरकार बनने के बाद विदेश नीति में नवीन संकल्पनाओ और प्रतिमानो की स्थापना चर्चाअकादमिक क्षेत्र में शुरु हुई। किस तरह हमारी घरेलु राजनीति ने भारत की पश्चिम एशिया के प्रति विदेश नीति को प्रभावित किया,उसका भी उल्लेख किया गया है।जिसके अंतर्गत इजराइल के रिस्तो को प्रगाढ़ता प्रदान करना,संयक्त राष्ट्र संघ में फिलिस्तीनी मुद्दे पर अनुपस्थित रहना। वही मेक इन इंडिया,सांस्कृतिक कूटनीति, अंतरीक्ष कूटनीति जैसे कारको के माध्यम से महाशक्ति बनाने की चाह इत्यादी आयामों कीविवेचना की गयी है। इसके साथ दक्षिण एशिया महाद्वीप में सार्क जैसे संगठन के विकल्प के तोर पर बिम्सटेक को वरीयता देना जैसे तत्व भारतीय विदेश नीति में यथार्थवादी और सामाजिक संरचनावादी दृश्टिकोणों को चरितार्थ करती है।

References

1. Ahmad, Saleem. World Focus India's Foreign Policy: Past, Present and Emerging Ties in the World. 2016.
2. Buzan, Barry. People, States and Fear: An Agenda for International Security Studies In the Post-Cold War Era', Harvester Press Group.1991.
3. Keohane Robert, Nye Joseph. Power and Interdependence, Longman.2001.
4. Misra, Ranjan World Focus,Chabahar the Connect: India Iran and Afghanistan and Central Asia. 2016.
5. TripathiSudhanshu. World FocusIndia's Foreign Policy:New Contexts & Consequent Adjustments.2016.
6. Ganguly, Anirban Chauthaiwale, Vijay Sinha, Uttam Kuamr. Modi Doctrine: A New Paradigms in Indian foreign Policy for India, Kindle Edition.2016.